Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–314

B.A. (Part–III) (NC) Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - II

(निबंध एवं भाषा)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर सीमा **50** शब्द) :

   (i) 'मन की दृढ़ता' निबन्ध के आधार पर दृढ़ मन की क्या विशेषताएँ हैं ? बताइए।

   (ii) ''उपयोगी वस्तु ही मूल्यवान समझी जाती है, अनुपयोगी नहीं।'' 'साहित्य का मूल्य' निबन्ध के अनुसार इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

(iii) नाखून क्यों बढ़ते हैं ? प्रस्तुत निबन्ध में विचारणीय प्रमुख बिन्दु को स्पष्ट कीजिए।

(iv) निराला द्वारा सृजित रचनाओं में काल अर्थात् समय के अनुसार क्या परिवर्तन आया था ? 'प्रसाद और निराला' निबन्ध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(v) 'प्रेमचन्द और भाषा समस्या' निबन्ध के आधार पर बताइए कि प्रेमचन्द अंग्रेजी को पसन्द क्यों नहीं करते थे ?

(vi) ''नैतिकता में शक्ति का विलोपन हो जाता है।'' प्रस्तुत उक्ति को 'परम्परा बोध और समकालीन साहित्य' निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(vii) भाषा और लिपि में अंतर बताइए।

(viii) निबन्ध रचना के प्रमुख तत्वों का नामोल्लेख कीजिए।

(ix) आचार्य शुक्ल के प्रमुख दस निबन्धों के नाम लिखिए।

(x) हिन्दी की विभाषा अर्थात् बोलियों का नामोल्लेख कीजिए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित सात में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. देखिए, आपके दाँत ही यह शिक्षा दे रहे हैं कि जब तक हम अपने स्थान, अपनी जाति (दंतावली) और अपने काम में दृढ़ हैं तभी तक हमारी प्रतिष्ठा है। यहाँ तक कि बड़े-बड़े कवि हमारी प्रशंसा करते हैं, बड़े-बड़े सुन्दर मुखारविन्दों पर हमारी मोहर 'छाप' रहती है। पर मुख से बाहर होते ही हम एक अपावन घृणित और फेंकने योग्य हड्डी हो जाते हैं–'मुख में मानिक सम दशन, बाहर निकसत हाड़'। हम नहीं जानते कि नित्य यह देख के भी आप अपने मुख्य देश भारत और अपने मुख्य सजातीय हिन्दू-मुसलमानों का साथ तन, मन, धन और प्रानपन से क्यों नहीं देते। याद रखिए, 'स्थान भ्रष्टा न शोभते दंता केशा नखा नराः।'

3. गदहा पीट घोड़ा न हो सकेगा, ऐसा मानने वालों के मत का खण्डन करना हमारा तात्पर्य नहीं है। किन्तु इसके साथ ही हम यह भी मानते हैं कि बुद्धि का काम मनुष्य को सत्कर्म-सम्बन्धी शिक्षा देने से यही मालूम होता है कि यद्यपि जो बात प्रबल संस्कार के कारण या किसी दूसरे-दूसरे हेतु से दैव ही ने किसी को नहीं दिया, वह बात हम उसमें न उपजा सके तो इतना करें कि सदुपदेश की परिणत दशा पर उसकी आँख तो खोल दें, अर्थात् उसकी अपेक्षा दस भले लोग और दस बुरे लोगों के साथ उसके चाल-चलन

का मिलान कर उसकी भली या बुरी चित्तवृत्ति का एक अन्दाजा तो उसे दे दें। उपरान्त उसे स्वयं अधिकार है, चाहे वह अपनी दशा को आगे बढ़ावे अथवा अध:पतन से अपने को नीचे गिराता ही जाय, क्योंकि अब यह कहने वाला तो कोई न रहेगा कि सुधारने के लिए किसी ने कुछ यत्न नहीं किया।

4. जो साहित्य जीवन को पूर्ण बनाये, वही सत्साहित्य है। जीवन की पूर्णता का अर्थ है—भौतिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक (जिसमें धर्म और कला दोनों ही सम्मिलित हैं) मूल्यों की सम्पन्नतापूर्ण समन्विति। हम वैविध्य-शून्य अभावों की समन्विति नहीं चाहते हैं। हम चाहते हैं वीणा के स्वरों अथवा इन्द्रधनुष के रंगों का-सा विविधतापूर्ण सम्पन्न साम्य सत्साहित्य जीवन के व्यापक क्षेत्र में, विविधता में एकता स्थापित करने वाले विकासवाद के चरम लक्ष्य को चरितार्थ करता है। मनुष्य केंचुए से तथा उससे भी उच्च श्रेणी के जीवधारियों से अधिक विकसित इसलिए कहा जाता है कि उसके अंगों में कार्यों के वैविध्य के साथ पूर्ण अन्विति है। सत्साहित्य का क्षेत्र न किसी वर्ग-विशेष में सीमित होगा और न उनमें किसी का बहिष्कार होगा। जहाँ उसको मानवता के दर्शन होंगे, उसकी वह उपासना करेगा।

5. हमारे संस्कारों में जीवन के लिए आवश्यक सिद्धान्त ऐसे सूत्र रूप में समा जाते हैं जो प्रयोग रूपी टीका के बिना न नष्ट हो पाते हैं और न उपयोगी। 'सत्यं ब्रूयात्' को हम सिद्धान्त रूप में जानकर भी न अपना विकास कर सकते हैं और न समाज का उपकार, जब तक अनेक परिस्थितियों, विभिन्न स्थानों और विशेष कालों में उसका प्रयोग कर उसके वास्तविक अर्थ को समझ न लें—उसके यथार्थ रूप को हृदयंगम न कर लें।

6. किसी भी देश और जाति की उन्नति में वह आत्म-सम्मान की भावना जनता में जोश भर देती है, उसे संगठित होकर नए-नए मोर्चे फतह करने में बेहद मदद देती है। प्रेमचन्द का स्वाभिमान यह देखकर तिलमिला उठता था कि गुलाम देश के बुद्धिजीवी अपने मालिकों की भाषा पर अभिमान करते हैं। अंग्रेजी भाषा के प्रभुत्व को उन्होंने साम्राज्यवादी प्रभुत्व का ही अटूट हिस्सा बताते हुए कहा था—''अंग्रेजी राजनीति का, व्यापार का, साम्राज्यवाद का हमारे ऊपर जैसा आतंक है, उससे कहीं ज्यादा अंग्रेजी भाषा का है। अंग्रेजी राजनीति से, व्यापार से, साम्राज्यवाद से तो आप बगावत करते हैं, लेकिन अंग्रेजी भाषा को आप गुलामी के तौक़ की तरह गर्दन में डाले हुए हैं।''

7. आधुनिकता को समझने के लिए 'संस्कार' और 'मूल्य' का भेद मन में खूब साफ रहना चाहिए। समता, स्वतंत्रता, सौन्दर्योपासना, रसभोग, आनंद, आवारागर्दी, गुण्डई, श्रेय, प्रेय आदि मूल्य हैं। परन्तु कोमलता, क्रोध, शोक, रस-लुब्धकता, बेचैनी, कामुकता, उदात्तता, मोहभंग, विकर्षण, निराशा, संशय, प्रश्नाकुलता आदि संस्कार हैं। मूल्य—यानी उद्देश्य—बिन्दु या पुरुषार्थ। संस्कार—यानी मानसिक वृत्ति। इसी प्रकार संस्कारों को 'तथ्य' (फैक्ट) नहीं माना जा सकता है। मूल्य, तथ्य और संस्कार परस्पर एक-दूसरे को प्रभावित और संशोधित करते हैं, पर वे एक ही नहीं। कोई नहीं कह सकता—अमुक-अमुक तथ्यों या मूल्यों की चर्चा करो तो आधुनिक कविता या कहानी हो जाएगी।

8. जिन्दगी कुछ ऐसी ही बेदर्द है कि दु:ख का संकल्प भी नहीं देती, दु:ख में मिटने का संकल्प भी नहीं लेने देती। इतनी नादान है कि नीचे गिरे हुए पत्तों सरीखे झूठे सुख के सपने बीनती रहती है। यह न जलना जानती है, न सरसना, केवल गीली लकड़ी की तरह धुआँ बनना जानती है; अपने लिए भी दूसरों के लिए भी घुटन बनना जानती है। काश, बाजू के तमाल से सीख लेती, समूची-की-समूची मिटती और समूची-की-समूची मिटकर महकती। फिर कहाँ धरती की आकांक्षा की ऊर्ध्वग शिखा तमाल और कहाँ घुटकर मरी हुई हसरतों का मजार आदमी। बड़ा फर्क है, दूसरों का और अपना होने में।

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्धकला की प्रमुख विशेषताओं की विश्लेषणात्मक समीक्षा कीजिए।

10. महादेवी वर्मा द्वारा लिखित निबन्ध 'जीने की कला' के मूल विचार को स्पष्ट कीजिए।

11. देवनागरी लिपि के गुण और दोष बताइए।

12. 'मेरा प्रिय निबन्धकार' विषय पर एक साहित्यिक निबंध लिखिए।